प्रेमचंद युगीन संस्थाओं का स्वरूप

पटेल निर्मलाबहन इच्छुभाई
(पीएच.डी.शोधार्थी)
चलभाष :- 9726891505
अणुडाक :- nipatel2327@gmail.com

डॉ. महेश एम.पटेल
(शोध निर्देशक)
सह प्राध्यापक (हिंदी विभाग)
श्री जे.बी.धारुकावाला महिला आर्ट्स कॉलेज,
(वी.एन.द.गु.विश्वविद्यालय)
सूरत.गुजरात ।

प्रस्तावना :

किसी भी युग के साहित्य का सम्यक अध्ययन युग परिस्थितियों के आधार पर ही किया जाता है। कहाँ जाता है कि युग परिस्थितियां ही साहित्यकार को जन्म देती है। उसका निर्माण कर उसे साहित्य सृजन की तरफ मोड़ती है। जब देश में कोई नई लहर उठती है, तो साहित्यकार उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। और उस प्रभाव का प्रमाण उसके साहित्य में उभर कर आता है।

भारत में भी युग परिस्थितियों में सुधार लाने के लिए सामाजिक एवं राजनीतिक संस्थाओं को स्थापित किया गया। इन संस्थाओं ने समाज सुधार तथा राजनीतिक सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सामाजिक कुरीतियों की बात करें तो उसमें जाति प्रथा एवं वर्ण व्यवस्था, अस्पृश्यता, बाल विवाह, विधवा विवाह, सती प्रथा, वेश्यावृत्ति आदि कुरीतियों को समाप्त करने के लिए ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, थियोसॉफिकल सोसायटी, रामकृष्ण मिशन आदि सामाजिक सुधारक संस्थाओं ने महत्वपूर्ण कार्य किया तथा समाज को नवजागृति प्रदान करने का प्रयास किया।

प्रेमचंद के समय में भी यह लहर देखने को मिलती है। उनके समय में देश की सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक दशा अत्यंत कुंठित थी । इसके सुधार के लिए अनेक संस्थाएं प्रयत्नशील हो गई थी, जिनमें पर्याप्त मात्रा में सफलता भी मिल रही थी। इसके चलते प्रेमचंद के साहित्य में भी इन संस्थाओं का प्रभाव हो रहा था। जिस तरह से संस्थाएं सुधार का प्रयास कर रही थी, उसी तरह प्रेमचंद अपने साहित्य के माध्यम से लोगों में जागरूकता लाने का प्रयास कर रहे थे। सामाजिक संस्थाओं तथा प्रेमचंद दोनों का उद्देश्य समाज में सुधार लाना ही था। किंतु इन संस्थाओं के कुछ कार्यक्रमों से प्रेमचंद सहमत नहीं है, उनका विरोध भी उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से किया है। प्रेमचंद के साहित्य में सामाजिक संस्थाओं की बात करें तो उन्होंने अपने उपन्यासों में संस्थाओं का स्वरूप कुछ इस तरह से प्रस्तुत किया है।

प्रेमचंद के वरदान नामक उपन्यास में आर्य समाज का रूप बहुत ही मुखक कर सामने आया है। सन 1901 से 1916 के काल में आर्य समाज अत्यंत सक्रिय संस्था के रूप में प्रसिद्ध हुआ। और इस समय मुंशी प्रेमचंद बाकायदा आर्य समाज के सदस्य थे। आर्य समाज ने अस्पृश्यता निवारण के लिए अनेक सराहनीय कदम उठाए, जैसे कि **"मेघ जाति हिंदुओं की एक ऐसी अस्पृश्य जाती थी, जिसे ना तो सार्वजनिक कुएं से जल लेने का अधिकार था और ना मंदिर प्रवेश का।"१** आर्य समाज ने इस जाति के उद्धार का कार्य 1903 से ही आरंभ कर दिया। आगे चलकर यह सन 1912 में 'आर्य मेघा' नामक संस्था से कायम हो गई।

भारत गावों का देश है, तथा गांव में अशिक्षा, जड़ता एवं अंधविश्वास की जड़ें बड़ी मजबूती से जमी हुई थी। प्रेमचंद ने भी वरदान के जरिए भारत के गांवों की तत्कालीन दशा का वर्णन प्रस्तुत किया है। और गांव के अंधविश्वास और जड़ता को बताने का प्रयास किया है। वरदान की विरजन अपने पति कमलाचरण के पास मझगांव से जो पत्र भेजती थी उसमें पति पत्नी का प्रेम मात्र ना होकर उसमें गांव के लोग जो जड़ता पूर्ण मान्यताएं अपने मन मस्तिष्क में पाल कर बैठे हैं, उसका सटीक वर्णन करते हुए कहती है कि **"देहातियों की यह हालत है कि घर में बच्चा बीमार हुआ की भूत की पूजा शुरू हो गई। स्थिति यह है कि गांव के लोगों के जीवन में ईश्वर की जगह भूत आ बैठा है।"२** यह अपवाद सिर्फ विरजन के गांव का नहीं है। अपितु भारत के ज्यादातर गांव का प्रतीक है। प्रेमचंद ने गांव की यह दशा उनकी मान्यताओं की व्यर्थता को विरजन के माध्यम से प्रस्तुत की है। धर्म के क्षेत्र में सुधार लाने का जो यह प्रयास था वह वरदान उपन्यास में अभिव्यक्त हुआ है।

भारतीय समाज में जिन विकृतियों और समस्याओं की तरफ सुधारक वर्ग का ध्यान अनायास ही खींचा जा रहा था, वह है वेश्या समस्या। भारतीय सुधारकों ने पहले पहल यह माना कि हिंदू समाज में बाल विवाह की जो प्रथा पनप रही है, वही वेश्या प्रथा का मूल कारण है। जिस समाज में दादा

की उम्र के लोगों से बालिकाओं का विवाह कर उन्हें आगे चलकर वेश्याओं के व्यवसाय में धकेला जा रहा था। और आर्य समाज में इस समस्याओं को कम करने के लिए भी सराहनीय प्रयास किए । अब प्रेमचंद सामाजिक विकृतियों के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद करते हैं। प्रेमचंद ने इस समस्याओं को एक चुनौती के रूप में स्वीकार कर सबके सामने प्रस्तुत किया है।

सेवा सदन में भोली नामक एक वेश्या का वर्णन किया गया है। जिसमें भोली के पिता उसको एक दौलतमंद बड़े मियां के गले मठ दिया था । भोली को उसकी सूरत से ही नफरत थी। कुछ समय तो वह उसके साथ व्यतीत कर लेती है, किंतु वह सब लंबे समय तक सह नहीं सकती और अपना विद्रोह प्रकट करते हुए कहती है कि **"वह कोई भेड़ बकरी तो है नहीं कि मां-बाप जिसके गले मठ दे उसी की हो कर रहे।"३** वह विद्रोह कर अनमेल विवाह से भागती तो है, पर अंत में वह वेश्या बन जाती है।

सुमन सेवा सदन की एक ऐसी पात्र है जो अच्छे घर में पली-बडी है। किंतु दहेज की असुविधा के कारण उसका विवाह गजाधर से कर दिया जाता है। गजाधर जी तोड़ परिश्रम करके घर चलाने का प्रयास करता है, किंतु सुमन ने यह शिक्षा ही नहीं पाई थी की जिसकी प्रेरणा से वह संतोष के साथ परिस्थितियों के साथ समझौता कर सके, सीमित आय के भीतर रह सके, परिणाम यह होता है कि पति पत्नी के बीच तनाव की स्थिति हो गई। इसके चलते सुमन धीरे धीरे भोली से मिलने लगी। आगे चलकर गजाधर पदम सिंह के घर सुमन का थोड़ी रात गए रह जाने के मामूली से अपराध में सुमन को उसका पति अपने घर से निकाल देता है। परिणामस्वरूप सुमन गजाधर को बताती है, की किन परिस्थितियों में वह वेश्यावृत्ति अपनाने के लिए विवश हुई थी। **"तुम्हारे दारिद्रय और इससे अधिक तुम्हारे प्रेम विहीन व्यवहार ने मुझमें असंतोष का अंकुर जमा दिया और चारों और पाप जीवन की मान मर्यादा, सुखविलास देखकर इस अंकुर ने बढ़ते बढ़ते भटक ट्रैये के सदृश सारे हृदय को छा लिया। उस समय एक फफोले को फोड़ने के लिए जरा सी ढेक भी बहुत थी। तुम्हारी नम्रता, तुम्हारी सहानुभूति उस फफोले पर फोहे का काम कर देती पर तुमने उसे मसल दिया।"४**

अगर गजाधर चाहता तो वह सुमन को वेश्या बनने से रोक सकता था। किंतु उसका जो पुरुष अहम ना भूल सका और अहम के कारण वह सुमन को अपनी अनुगामिनी ही समझता था। सुमन ईमानदारी के साथ मेहनत मजदूरी कर अपना गुजारा करना चाहते थी, किंतु समाज उसके लिए उसे अवसर नहीं देता।

प्रेमचंद ने नारी जीवन की बेबसी पर सहानुभूति से विचार किया तथा दूसरी ओर इन वेश्याओं की बेटियां जो इन परिस्थितियों के कारण अपनी मां की तरह ही वेश्या बनने के लिए बाध्य हो जाती है। प्रेमचंद उनके लिए कुछ करना चाहते हैं जो सचमुच कारगर हो। । उसी के चलते वह सेवा सदन की स्थापना करते हैं। इस संस्था में शिक्षा उपलब्ध करवाकर वेश्या पुत्रियों को कुशल गृहिणी बनाने का कार्य किया जा सकता है।

वेश्या समस्या ने बड़े-बड़े समाज सुधारकों का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किया था। प्रेमचंद ने भी अपने आर्य समाजी संस्कार के कारण सेवा सदन की कल्पना की और इस उपन्यास में सामाजिक, आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक कारणों के साथ इस समस्या को उद्धृत किया है। तथा संस्थाओं के कार्य को सराहा है।

प्रेमचंद आर्य समाज को पसंद तो करते थे। किंतु प्रेमचंद आर्य समाज के कुछ कार्य को इतना नहीं सराहते थे। जिसमें से एक यह है - **"यदि हिंदुओं को मांस खिला कर अथवा कलमा पढ़ाकर मुसलमान बनाया जा सकता है, तो फिर जनेऊ पहनाकर किसी मुसलमान को हिंदू क्यों नहीं बनाया जा सकता?"५**

प्रेमचंद युग में राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन भी अपने चरम-सीमा पर था। इसी के चलते प्रेमचंद जैसे युगवादी लेखक पर स्वाधीनता आंदोलन का भी व्यापक प्रभाव रहा है। भारत के राष्ट्रीय

आंदोलन के इतिहास में सन 1905 और 1921 दोनों का महत्व अधिक रहेगा। सन 1885 में म. ह्यूम के प्रयत्न से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हो चुकी थी। इस संस्थान का उद्देश्य लोगों में राष्ट्रीय चेतना का उत्पन्न करना नहीं था। बल्कि उसे संयमित और नियंत्रित करना था। कांग्रेस की स्थापना के बाद एक ऐसा मंच बन गया था जहां भारत की बुद्धिजीवी, समाज सुधारक एवं राजनीतिज्ञ एकत्र होकर देश की स्थिति पर विचार कर सकते थे।

प्रेमचंद अपने साहित्य के माध्यम से समाज सुधार कर रहे थे। अपने युग के जागरूक प्रवक्ता प्रेमचंद के 'वरदान' औपन्यासिक कृति में बंग आंदोलन के आक्रोश का स्पष्ट चित्र कहीं नहीं दिखाई जाता। क्योंकि बंग विभाजन के विरुद्ध होने वाला आंदोलन प्रायः बंगाल और बंगालियों तक ही सीमित रह गया था।

वरदान की सुवामा के प्रमाण पर तत्कालीन राष्ट्र भावना को प्रेमचंद ने अपने उपन्यास में प्रस्तुत किया हैं । राष्ट्र सेवक के रूप में सुवामा के पुत्र प्रतापचंद की अवतारणा होती है। वह कहता है कि **"यदि आप दृढ़ता से कार्य करते जाएंगे तो अवश्य सभीष्ट सिद्धि का स्वर्ण स्तंभ दिखाई देगा। तुम्हारी परीक्षाएं होंगी, लगातार निराशाओं का सामना करना पड़ेगा। दृढ़ता यदि सफल न भी हो सके तो संसार में अपना नाम छोड़ जाती है।"६** प्रतापचंद्र की समाज सेवा राष्ट्र सेवा का रूप ग्रहण करलेती है।

गांधी जी के चंपारण और खेड़ा के आंदोलनों का प्रभाव भी प्रेमचंद के प्रेमा श्रम उपन्यास में देखने को मिलता हैं । प्रेमचंदने यह महसूस किया था कि भारतीय कृषक वर्ग के भिन्न-भिन्न स्वार्थों के संघर्ष का शिकार हो गया है। इस उपन्यास में प्रेमचंद का आशय यह रहा की समग्र भारत के कृषक वर्ग की समस्याओं को प्रस्तुत करना था। उन्होंने व्यक्तिगत नायक रूप में उपस्थित न करके सारे गांव को उपन्यास का नायक बना दिया है। कहा जा सकता है कि **"प्रेमचंद को गांव की ओर जाने की प्रेरणा किसानों की समस्या को चित्रित करने की प्रेरणा चंपारण और खेड़ा आंदोलन के उस संदेश से प्राप्त हुए जिसमें बताया गया था कि देश के कल्याण के निमित्त छेड़े जाने वाले आंदोलनों का केंद्र गांव को ही होना चाहिए।"७**

गांव के भोले भाले किसान अशिक्षित एवं दुनियादारी से अनजान हैं। कानून का अधिकार नहीं जानते। इसलिए वे जमींदार और सरकार के मुलाजिमों के बिछाए जाल में फंस जाते हैं।

निर्मला उपन्यास में प्रेमचंद ने अवसर निकालकर देश की दशा को भी उजागर किया है। निर्मला के कृष्णा पात्र के माध्यम से प्रेमचंद ने कुटीर उद्योग की महत्ता को भी प्रस्तुत किया है **"देश के इस कुटीर उद्योग का आर्थिक महत्व भी है। खादी गरीबों का रोजी-रोटी देती है और वस्त्र संबंधी हमारी परवशता की स्थिति को दूर करती है। तथा स्वावलंबी बनाती है। किंतु निर्मला उपन्यास में यह प्रसंग किसी आर्थिक समस्या के समाधान के रूप में नहीं आता। इस प्रसंग की योजना यह दिखाने के लिए होती है, कि गांधीजी की प्रेरणा से रचनात्मक कार्यकर्ताओं का एक दल देश में तैयार हो रहा है और खादी हमारे राष्ट्रीय आंदोलन का एक अंग हो गई है।"८**

प्रेमचंद नारी को राष्ट्रीय जीवन का अभिन्न अंग मानते थे। निर्मला उपन्यास के कृष्णा पात्र के माध्यम से प्रेमचंद ने यह बताने का प्रयास किया है कि भारत का नारी समाज भी खादी आंदोलन में योगदान देने के लिए तैयार हो रहा है। प्रेमचंद प्रसन्न थे कि भारत का नारी समाज भी राष्ट्र के विकास में अपना योगदान देने के लिए तैयार है।

कहां जाता है कि किसी भी राष्ट्र की जनता जब अपनी संस्कृति और सभ्यता से भटक जाती है तो यह पतन की ओर जाती है। लोग अपनी पुरानी संस्कृति और सभ्यता को त्यागकर पाश्चात्य संस्कृति को ग्रहण कर रहा था। जिससे भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का पतन होता जा रहा था।

थियोसॉफिकल सोसायटी एवं राम कृष्ण मिशन ने सेवा, प्रेम और त्याग को ही सहज मानवीय गुण माना है। थियोसॉफिकल सोसायटी ने भारतीय अध्की आध्यात्मवाद की उच्चता का विदेशियों का भी ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास श्रीमती एनी बेसेंट ने किया है। प्रेमचंद ने सेवासदन उपन्यास में इसकी चर्चा की है। वह सेवा सदन में स्पष्ट कहते हैं कि **"हम उपनिषदों को अंग्रेजी में पढ़ते हैं, गीता को जर्मन में, अर्जुन को अर्जुना, कृष्ण को कृष्णा कहकर अपनी बुद्धिमता का परिचय देते हैं।"९**

प्रेमचंद ने सेवा सदन में यह भी बताया है कि **"संस्कृत की पुरानी पोथियों से हमारा काम नहीं चल सकता लेकिन हिंदी में रामचरितमानस विनय पत्रिका और भक्त माल जैसी पुस्तके हैं जिनमें हमारे हृदय में धर्म के वृत्ति उत्पन्न करने की अपार शक्ति है।"१०**

कायाकल्प के माध्यम से प्रेमचंद ने थियोसोफिकल सोसाइटी के विचारों को विस्तार से प्रस्तुत करते हैं। थियोसॉफिकल सोसायटी में भौतिकवाद के बढ़ते प्रभाव से हानि का अनुभव कर आध्यात्मवाद की प्रतिष्ठा करने का प्रयास किया था। कायाकल्प में एक पंक्ति से ही विदित होता है कि **"भौतिक विज्ञान से आत्मा का ज्ञान प्राप्त नहीं होता।"११** पाश्चात्य आधुनिक विज्ञान के मुकाबले यहां पर भारतीय आध्यात्मवाद की महत्व का उद्‌घोष किया था और बताया कि **"नई दुनिया जहां पहुंचने के लिए जोर आजमाइश कर रही है। भारतीय मनीष आज से ही बहुत पहले ही वहां पहुंच चुके थे। उक्त सोसाइटी के इस विचार को प्रेमचंद ने कायाकल्प में इस प्रकार वाणि दी है "मेरा यान आकाश में जितनी ऊंचाई तक पहुंच सकता है उसकी यूरोप वाले कल्पना भी नहीं कर सकते।"१२**

निष्कर्ष :

प्रेमचंद ने अपने साहित्य में सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि विभिन्न रूप दृष्टिगत किए हैं। उनके समय में विविध संस्थाएं अपने अपने क्षेत्र में प्रयत्नशील थी। तो दूसरी तरफ प्रेमचंद साहित्य के माध्यम से जागरूकता लाने का प्रयास कर रहे थे। समकालीन समय में भी प्रेमचंद युग की समस्याएं देखने को मिलती है। क्योंकि पाखंड तथा अंधविश्वास आज भी अपनी गहरी जड़ जमाए बैठा है, पश्चिम की तरफ हमारी अंधी दौड़ने हमारी संस्कृति को आत्मसात करते जा रहा हैं । प्रेमचंद युगीन संस्थाओं ने हमारे देश की संस्कृति एवं राजनीतिक पक्ष में सुधार लाने का पूरा प्रयास किया है। मानो जैसे प्रेमचंद और उनके युग की संस्थाएं दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

१. प्रेमचंद और युगीन संस्थाएं,देवेंद्र कुमार गुप्ता. पृ. सं. ५४
२. वही, पृ. सं. ५५
३. सेवा सदन, प्रेमचंद. पृ.सं. ५४
४. सेवा सदन, प्रेमचंद. पृ .सं. २४६
५. प्रेमचंद और युगीन संस्थाएं, देवेंद्र कुमार गुप्ता, पृ. सं. ६५
६. वरदान, प्रेमचंद. पृ. सं. ४
७. प्रेमचंद और युगीन संस्थाएं, देवेंद्र कुमार गुप्ता. पृ. सं. ८६
८. वही पृ. सं. ९७
९. सेवासदन, प्रेमचंद. पृ. सं. २३६
१०. प्रेमचंद और युगीन संस्थाएं, देवेंद्र कुमार गुप्ता. पृ. सं.११४
११. कायाकल्प, प्रेमचंद. पृ. सं.७८
१२. प्रेमचंद और युगीन संस्थाएं, देवेंद्र कुमार गुप्ता. पृ. सं. ११